Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

नवाव आसफुद्धौला के काल में निर्मित बागो का ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व

Dr. Narendra Singh*

Assistant Professor, History, Government Girls P. G. College, Kurawali, Mainpuri

सांराशः- *बाग-बगीचों का निर्माण भारत वर्ष में प्राचीन काल से होता रहा है इन बागों को बौद्ध विहारो तथा मन्दिरों में निर्मित किया जाता था मुगलों के भारत में आगमन के बाद बागों के निर्माण में तेजी आयी उन्होंने अपने मकबरों को बागों के मध्य में निर्मित किया चूँकि अवध सियासत के संस्थापक सआदत खाँ मुगलों के अधीन सूबेदार थे अतः वह मुगलों के इस शौंक से प्रभावित हुए नहीं रह सके कालान्तर में अवध के नवाव जिनमें आसफुद्धौला का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है के समय लखनऊ में अनेक बागो जिनमे ऐश बाग, चारबाग, मोहम्मद बाग, हुस्न बाग आदि अन्य बागो का निर्माण हुआ। इन बागो का अपना विशेष सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्व है।*

----------X----------

भारत वर्ष में स्थापत्य कला के साथ-साथ उद्यान निर्माण कला का विकास प्राचीन कला से होता रहा है। इन बागों को बौद्ध विहारो तथा मन्दिरों के साथ निर्मित किया जाता था। यह बाग आमजन के लिए खुले रहते थे इसके अतिरिक्त धनी वर्ग के लोग तथा राजवंशें के राजा भी अपने मनोरंजन के लिए वागो का निर्माण कराते थे लेकिन इन बागो में आमजन का प्रवेश नहीं था। मध्यकाल में मुगल बादशाहो ने बागो के निर्माण में विशेष रूचि ली। मुगल काल में निर्मित बागो की प्रमुख विशेषता निर्माण में चारबाग पद्धति का प्रयोग। इस काल में बागों को आयताकार व वर्गाकार बनाया जाता था। तथा उन्हें चार बराबर भागों में बांटकर उसके केन्द्र में कोई मकबरा या बरादरी को बनाया जाता था जिसे पैदल या पथमार्ग द्वारा चारों ओर से जोड़ा जाता था तथा बागो में छोटी-छोटी नहरो की रचना की जाती थी जिसमे फब्बारे आदि लगाये जाते थे। बाग चाहर दीवारी से घिरे होते थे जिनके मध्य में विशाल प्रवेश द्वार होता था।

अवध रियासत की स्थापना 1722 ईसवी में मुगल बादशाह रोशन अख्तर उर्फ मो0 शाह रंगीले के समय उसके अवध के सूबेदार सआदत खाँ 'बुराहनुल मुल्क' ने की थी उसके बाद सफदरजंग, शुजाउद्धौला, आसफुद्धौला, बजीर अली, सआदत अली, गाजीउद्धीन हैदर, नासिरूद्धीन हैदर, मो0 अली, अमजद अली तथा अन्तिम बादशाह बाजिद अली शाह के समय अवध की जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसके कारण नवाबी शब्द एक शब्द नहीं रहा बल्कि किसी अदब और अन्दाज की परिभाषा वन गया। चूंकि अवध के नबावों का मुगलों के साथ लम्वे समय तक सम्बन्ध रहा इस कारण वह मुगलो के स्थापत्य तथा बाग निर्माण में रूचि से प्रभावित हुए विना नहीं रह सके। बाग निर्माण में अवध के सभी नवावो ने रूचि ले लेकिन इन नाबावो में आसफद्धौला का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय।

आसफुद्धौला अवध के तीसरे नबाव शुजाउद्धौला के बड़े पुत्र थे। इनका जन्म 1161 हिजरी अर्थात् 1748 में हुआ था इनकी माँ का नाम बहु बेगम था। इनका असली नाम मिर्जा अमानी उर्फ याहिया खान था आसफुद्धौला की उपाधि इन्हे मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय (अली गौहर) ने दी थी। अपने बालिद की मृत्यू के बाद 1775

www.ignited.in

ई0में0 इनकी गद्दीनशीनी हुई तथा 1797 तक यह अवध के नावाव रहे। गद्दी पर बैठने के बाद आसफुद्धौला ने अवध की राजधानी को फैजाबाद के स्थान लखनऊ स्थानान्तरित कर दिया राजधानी हस्तान्तरण का प्रमुख कारण नवाव के अपनी माँ तथा दादी के मधुर सम्बन्ध न होना था। 1784 में लखनऊ में भयंकर अकाल पड़ा अतः आसफुद्धौला ने अपनी अकाल पीड़ित जनता को रोजगार देने के लिए राजधानी लखनऊ में अनेक इमारतों का निर्माण कराया इन इमारतों में इमामबाडा, रूमी दरवाजा तथा बिबियापुर कोठी आदि प्रमुख है। इसी प्रकार आसफुद्धौला ने मुगलों से प्रभावित होकर अनेक बागों का भी निर्माण कराया अतः उस समय लखनऊ में यह कहावत मशहूर हो गयी थी "जिसको न दे मौला उसको दे आसफुदौला" इसके काल में निर्मित बागो का विवरण इस प्रकार है।

ऐश बागः-

ऐश का अर्थ (मौजमस्ती) चाहरदीवारी से घिरे इस बाग का निर्माण नवाब ने अपने एशोआराम के लिए कराया था। बाग में दीवारों के मध्य चारों ओर विशाल प्रवेश द्वार वने हुए थे। नवाब ने इस बाग में एक कृत्रिम झील का भी निर्माण कराया जिसका नाम मोती झील था इस झील के बारे में समकालीन शायरो ने अनेक नज्मो की रचना की जब इस झील में तैराकी प्रतियोगिता के आयोजन की खबर फैली तब शायरों ने लखनऊ में अपने मित्रों से शायराना अंदाज में जानकारी मांगी "सुनते है मोती झील में पानी आ गया है, तैराकियां भी होने लगी, बहर-ए-इम्तिहान"

ऐशबाग के महत्व का कारण यहाँ बरसात के मौसम में सावन माह में लगने वाला मेला था जिसका उद्घाटन स्वयं नवाब किया करते थे। यह मेला सावन माह के चारों शुक्रवार को लगता था। मेले को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे तथा अनेक प्रकार की वस्तुओं की खरीदारी किया करते थे। ऐश बाग में लगने वाले मेले की खासियत यहाँ होन वाली विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं विशेषकर मार्शल आर्ट तथा जिमनास्टिक आदि का आयोजन। ऐशबाग में मुशायरे का भी आयोजन किया जाता था जहाँ शायर अपनी नज्मों से लोगों का मनोरंजन किया करते थे।

इसी प्रकार ऐशबाग के खुशनुमा वातावरण ने लखनऊ में रहने वाले शायरो को अपनी नज्म लिखने के लिए प्रेरित किया, स्वयं अवध के अन्तिम बादशाह वाजिद अली शाह ने ऐशबाग के बारे कुछ पंक्तियों लिखी "रहना है लखनऊ में जिसे जाये ऐश बाग" "फिरते हैं ऐश बाग में, दिल बाग-बाग है"।

ऐशबाग में सन् 1794 में आसफुद्धौला के बड़े बेटे व उत्तराधिकारी बजीर अली की शादी का भी आयोजन किया गया था जिस पर लाखों रूपया खर्च हुआ था।

ऐश बाग 1857 के महान विद्रोह का भी गवाह है। 18-19 मार्च 1858 को जब अंग्रेजों ने लखनऊ पर कब्जा कर लिया तब मोलवी अहमदुल्ला (जो कि विद्रोह के प्रमुख नेताओं में से एक थे) अपने मुख्यालय तारोवाली कोठी से भागकर ऐशबाग आ गए थे। तारो वाली कोठी नवाब के समय अपनी बनावट के लिए मशहूर थी। लखनऊ पर कब्जे के बाद इस जगह काफी कत्लेआम किया जिसके कारण लोगों ने इसे खूनी कोठी कहना शुरू कर दिया।

क्राउन के शासन काल में ऐशबाग का स्वरूप नष्ट कर दिया गया। यहाँ विदेशी मदिरा के टेंक वनाये गए जिससे यहाँ का वातावरण प्रदूषित हो गया। वर्तमान में ऐशबाग एक औद्योगिक क्षेत्र में परिवर्तित हो गया।

चारबागः-

इस बाग का निर्माण आसफुद्धौला ने कराया था जिसका वर्णन समकालीन फारसी लेखक मीर हसन अली ने अपनी पुस्तक मिरात-उल-वलाद में करता है। इसी प्रकार मुखर्जी के अनुसार "चारबाग एक विशाल बाग था जिसे मुगलों की चारबाग शैली में बनाया गया था, जिसे चार बराबर भागों में बाँटा गया था बाग के मध्य एक पवेलियन (दीर्घा) वना था जो कि प्रत्येक तरफ से पैदल मार्ग से जुड़ा था। बाग में उनको फब्बारे लगे थे।

नजमुल धनी खान ने अपने विवरण में लिखा है कि चारबाग भी मिर्जा वजीर अली की शादी जो कि सावन माह में हिजरी 1208 (1794ई.) में हुई थी का गवाह है। यहाँ ऐश बाग की तरह विशिष्ट अतिथियों को ठहराया गया था जिसके लिए दौलतखाना-ए-खास से जो कि चार बाग से तीन कोस (10 किमी.) दूर था से ऐशोआराम के सभी साजो समान को चार बाग लाया गया।

गाजीउद्दीन हैदर के नवाबी काल में चारबाग के किनारे नहर का निर्माण कराया इस नहर में पानी गोमती नदी से आता था डोजसन ने अपने मानचित्र में जिसे 1857-58 में बनाया था इस नहर को दर्शाया था।

कमालुद्धीन हैदर ने अपने विवरण में लिखा है कि 1857 के विद्रोह में यहाँ बिरजिस कद्र के सैनिकों ने एक विशाल तोप नानकमत्ता को रखा था जिसे वह गोलागंज से लाये थे। क्रान्ति के बाद चारबाग को काफी नुकसान पहुँचा। कालान्तर में चारबाग को नष्ट कर अंग्रेज सरकार ने रेलवे स्टेशन का निर्माण कराया आरम्भ में यह एक छोटा रेलवे स्टेशन था जिसे 1914 में विशाल इमारत में परिवर्तित कर दिया। लाल रंग से पुत्री चारबाग रेलवे स्टेशन की इमारत में पीले रंग से पुती अनेक छतरियाँ वनी है। वर्तमान में इस रेलवे स्टेशन की इमारत को ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जा चुका है।

मोहमद बागः-

इस बाग का विवरण मिरात-उल-वलाद में तीन अन्य बागो के साथ किया गया है जिन्हें आसफुद्धौला ने वनवाया था। चाहरदीवारी से घिरा यह बाग पोलो मैदान के दोनों ओर विस्तृत था जिसके एक ओर वर्तमान क्लव मैदान है और दूसरी और प्रेरेस्टेबियन चर्च है।

इस बाग को चैथे बादशाह अमजद अली शाह ने अपनी खास महल मलिका अहद को भेंट किया था। 1857 की क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका के कारण गोरी सरकार ने दण्ड स्वरूप उनकी पेंशन का कम कर मोहमद बाग सहित अन्य सम्पत्तियां उन्हें सौंप दी। गदर के समय बेगम कोठी जग-ए-आजादी का मरकज वन गयी थी। जब 1857 में गोरी पलटन ने कोठी पर हमला किया तब ख्बाजासारा दराब अली खाँन के नेतृत्व में मुकाबला उन्हें खदेड़ दिया गया। 2 मार्च 1858 को मोहम्मद बाग और दिलकुशा पर गोरो का कब्जा हो गया विद्रोहियों के सरदार नजीब तिंलगस सहित सैकेड़ो विद्रोही मारे गए। कब्जे के बाद इस बाग को नयी सैन्य छावनी के साथ जोड़ दिया गया। अब इस बाग को मोहमद बाग क्लब के नाम से जाना जाता है।

हुस्न बागः-

हुस्न का शब्दिक अर्थ 'सुन्दरता' है लेकिन हसन का अर्थ साधारण है लेकिन दोनों शब्दों को एक ही तरह से लिखा जाता है लेकिन समकालीन लेखको ने इसे एक विशेष शब्द 'पेश' के साथ जोड़ा है। इरविन ने गलती से इसका जिक्र हसन बाग नाम से किया है जिसके कारण इस बाग सम्बन्ध आसफुद्धौला के नायब हसन राजा खान से जोड़ा गया। स्लीमैन जो कि अवध के रेजीडेन्ट रहे थे ने इस गलती को ठीक करते हुए लिखा था कि "यह बाग अवध के बादशाह की मुख्य बेगम का निवास स्थान रहा था (संभवतः गाजीउद्धीन हैदर)।

इस बाग में ही आसफुद्धौला के बड़े बेटे वजीर अली की बरात आयी थी तथा निकाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह के अलावा यह बाग एक अन्य शादी के लिए भी चर्चित रहा आगामीर जोकि अवध के पहले बादशाह गाजीउद्धीन हैदर के वजीर थे के बेटे आगा अली खान का विवाह नवाब शाह मीर की बेटी बावी बेगम के साथ इसी बाग में सम्पन्न हुआ था। नवाब शाह मीर इस निकाह के खिलाफ थे और वह अपनी याचिका दायर करने लंदन चले गए लेकिन सफलता न मिलने के बाद वह मिश्र चले गए और वही बस गए। बादशाह गाजीउद्दीन हैदर ने अपनी बेगम मुबारक महल (जो कि उनकी ईसाई पत्नी विलायती बेगम थी) से कहा कि वह बावी बेगम को अपने संरक्षण में ले ले और हुस्न बाग में आगा अली के साथ उसका निकाह सम्पन्न कराये। यह विवाह भी बड़ी शान और शौकत के साथ सम्पन्न हुआ।

बादशाह गाजीउद्धीन हैदर ने हिजरी 1330 में (1814 ई.) में इस बाग में बसन्त उत्सव मनाया तथा और अपेक्षा की कि इस उत्सव में आने वाले लोग पीले वस्त्र पहनकर आये। नामी ने लिखा है" इस उत्सव में चारों ओर पीला

रंग ही दिखाई दे रहा था चाहे वह लोगों के वस्त्र हो, पक्षी हो, वस्तु हो यहाँ तक पशु आदि सभी पीले रंग के थे।''

इस बाग का सम्बन्ध 8 जुलाई 1838 में हुई घटना के साथ भी जोड़ा जाता है। यहाँ के महल सारा में नासिरूद्धीन हैदर की प्रधान पत्नी सुल्तान बेगम (रूकैय्या सुल्तान बेगम) रहा करती थी। जब नासिरूद्धीन हैदर की मृत्यू हुई तब फरीदूँ बख्त उर्फ मुन्ना जान को उनकी दादी बादशाह बेगम ने अवध का तीसरा बादशाह घोषित करने का प्रयास किया जिसका कम्पनी सरकार ने विरोध किया अतः बादशाह बेगम अपने समर्थन के लिए सुल्तान बेगम के हुस्न बाग से लाल बरादरी ले गयी थी लेकिन तख्त नशीनी में हुई अफरा-तफरी में अंग्रेज सेना ने बादशाह बेगम और मुन्ना जान को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन सुल्तान बेगम को उनकी सेविकाओं द्वारा बचा लिया गया और सुरक्षित हुस्न बाग पहुँचा दिया गया।

हुस्न बाग में सुल्तान बेगम के साथ मलिका अफक जो तीसरे बादशाह मो. अली शाह की बेगम थी भी रहा करती थी 22 अक्टूबर 1850 यही उनका इन्तकाल हुआ। तसादक हुसैन के अनुसार ''मुगल शहजादा फिरोजशाह जो कि सुल्तान बेगम का रिश्तेदार था गदर के समय अपने सैनिकों के साथ अवध की सहायता के लिए लखनऊ आये तो वह हुस्न बाग में ही रूके थे।

कालान्तर में हुस्न बाग के निर्माण को गिराकर उसके स्थान पर मेडिकल कालेज के छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण किया गया आज इस छात्रावास ट्रांस गोमती छात्रावास के नाम से जाना जाता है।

बजीर बागः-

हसन अली रिजवी ने अपनी पुस्तक 'मिरात-उल-बलाद में लिखा है कि ''इस बाग का निर्माण आसफुद्धौला ने अपने उत्तराधिकारी बजीर अली के लिए कराया था लेकिन आगा मेंहदी के अनुसार इस बाग का संबंध आगा मीर (गाजीउद्धीन हैदर के वजीर) से है। जब नासिरूद्धीन हैदर बादशाह वने तब उन्होंने आगा मीर का अपदस्थ करके उनकी सभी सम्पत्तियों को जब्त कर कानपुर भेज दिया तथा बाद में इस बाग को मलिका जहान (मो0 अली शाह पत्नी) को दे दिया गया। यह बाग विभिनन प्रकार के फूलों के लिए प्रसिद्ध था।

इमामबागः-

हसन अली रिजवी इस बाग का संबंध भी आसफुद्धौला के साथ जोड़ते है। यह बाग इरादत नगर के निकट गोमती नदी के किनारे स्थित था 1857 के विद्रोह के वाद 9 मार्च 1858 को बिट्रिश सैनिकों ने करवला नासिरूद्धीन हैदर से लेकर इमाम बाग के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। इस संघर्ष में विद्रोही नेता नवाब अली ने गोरे की फौज का बड़ी वीरता से मुकाबला किया।

हैदर बाग-

नामी के अनुसार इस बाग का निर्माण भी आसफुद्धौला ने कराया था साथ उसी के द्वारा इस बाग में मुबारक महल और संगनी दलान का भी निर्माण कराय गया।

इस प्रकार आसफुद्धौला ने अपने शासन काल में जिन बागों का निर्माण कराया था उनका अपना विशेष सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्व है। यह बाग अवध के नवाबों की धार्मिक सहिष्णुता की नीति, सामाजिक उत्सवों जैसेः- मेले, शहजादों की शादियों, खेलकूद प्रतियोगिताएं, मनोरंजन आदि उत्तराधिकार सघर्ष, अवध की बेगमों की उच्च जीवन शैली तथा प्रशासन में उनकी सहभागिता, 1857 के महान विद्रोह की घटनाओं की उत्कृष्ट झलक प्रस्तुत करते है। इस प्रकार ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक स्त्रोत के रूप में इन बागों का अपना विशेष महत्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. अमीर हसन - पेलेस कल्चर ऑफ़ लखनऊ, डी.के. पब्लि, हाउस, नयी दिल्ली।

2. हे, सिडनी - हिस्टोरिक लखनऊ, पायनियर प्रेस, लखनऊ, 1930, पुनः ऐशियन एजु. सर्विस, नयी दिल्ली। (1994)

3. इरविन, लार्ड, एच, सी - दि गार्डन आफ इण्डिया, डब्ल्यू एच, एलेन एण्ड क., लंदन, 1880

4. लेवेलेन जौंस - ए फेटेल फ्रेण्डसिप -दि नवाब, दि बिट्रिश, एण्ड दि सिटी ऑफ़ लखनऊ, ओ.यू.पी. 1985, पुनः 1992

5. मुखर्जी, पी.सी. - प्रिक्टोरेल लखनऊ, मूल पब्लि 1883, पुनः एशियन एजुकेशनल सर्विस, नयी दिल्ली, 2003

6. आग मेंहदी, मौलवी सैयद - तारीख-ए-लखनऊ, कंरांची 1976

7. कमालुद्धीन हैदर - केसर-उत-त्वारीख खण्ड-02 नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1879

8. नजमुल धनी खान - तारीखे-ए-अवध खण्ड-3, रामपुर 1914

9. नामी काकोरली - मुरक्का-ए-खुसरती लखनऊ 1986

10. सुरूर रजब अली बैग - फसाना-ए-अजीब-मूल पब्लि. 1843, नोट के साथ रशीद हसन खान

11. तसादक हसन, शेख - बेगमात-ए-अवध, मूल प्रकाशन, लखनऊ 1940 पुनः किताब नगर, लखनऊ, 2012

12. योगेश प्रवीन - ताजदारे अवध, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ 1912

Corresponding Author

Dr. Narendra Singh*

Assistant Professor, History, Government Girls P. G. College, Kurawali, Mainpuri

E-Mail – singhdrnarendra10@gmail.com